Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 2, October-2020, ISSN 2230-7540

महिला और राजनीती

Nishat Arshi[1]*, Dr. Deepa Kushwah[2]

[1] **Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.**

[2] **Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.**

सार - भारत में बहुत सी महिलाएँ एक बहुत ही अनुचित और असमान समाज में रहती हैं, जहाँ उनके साथ अक्सर खराब व्यवहार किया जाता है। इससे उनके लिए अपनी मनचाही चीजें प्राप्त करना कठिन हो रहा है, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो वे चीजों को अपने दम पर बदलने के लिए कर सकते हैं। कुछ जगहों पर तो महिलाओं को सरकार में अपना प्रतिनिधि चुनने का भी मौका नहीं मिलता है। जबकि चुनी गई महिलाओं का अक्सर उनके परिवारों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है, ग्रामीण महिलाओं के लिए यह समान शक्ति होना बहुत दुर्लभ है। इस अध्ययन में, हमने भारत के एक राज्य उत्तराखंड में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी और सक्रियता पर सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक स्थिति के प्रभावों को देखा।

----------X----------

परिचय

भारत में, महिलाओं को पुरुषों से अलग देखा जाता है और उन्हें समान अधिकार और अवसर नहीं दिए जाते हैं। यह एक बड़ी समस्या है क्योंकि महिलाएं देश के विकास में पुरुषों जितना योगदान नहीं दे पाती हैं। अगर हम महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देते हैं और उनकी क्षमताओं को विकसित करने में उनकी मदद करते हैं, तो वे भारत में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद कर सकती हैं।

भारत की दुनिया में सबसे व्यापक लॉकडाउन प्रणालियों में से एक होने की प्रतिष्ठा है। यह प्रणाली महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने और राजनीति में उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करती है। हालांकि, यह प्रतिष्ठा हमेशा सटीक नहीं होती है। वास्तव में आजादी के बाद भी भारत में आधी से ज्यादा आबादी पुरुषों की तुलना में नगण्य है। यह बहुत ही परेशान करने वाला तथ्य ळें

भारत में ग्रामीण प्रशासन की प्राचीन काल से चली आ रही परंपरा रही है। रामायण और महाभारत के साहित्य में "सभा" (गाँव), "समिति" (गाँवों का समूह), और "गाँव" के संदर्भ हैं। एक पारंपरिक त्रि-स्तरीय प्रणाली में, ग्राम स्तर ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद के नियंत्रण में होता है। हालाँकि, पंचायती राज व्यवस्था के एक नए रूप में, जिसे **1959** में राष्ट्रीय विकास परिषद द्वारा आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई थी, इसे पहली बार राजस्थान में लागू किया गया था।

73वां संविधान संशोधन एक बड़ा बदलाव है जो पंचायती राज संस्थाओं को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा। नया संशोधन त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को अधिक शक्ति और अधिकार देगा, जो इसे एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करने में मदद करेगा। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को अपने समुदायों और लोकतंत्र को विकसित करने के लिए आवश्यक सहायता प्राप्त करने में मदद मिलेगी। भारतीय संविधान का **73**वां संशोधन पंचायतों (स्थानीय सरकारों) को गांवों में समानता और न्याय बनाने में मदद करने के लिए अधिक शक्ति और अधिकार देता है। इससे पंचायतों को वित्तीय मदद और संसाधन मिल सकेंगे जिससे उन्हें अपना काम बेहतर ढंग से करने में मदद मिलेगी।

क्रिया विधि

उत्तराखंड में महिलाओं के आंदोलन में उनकी भागीदारी, स्थानीय सरकार में महिला प्रतिनिधियों की भूमिका और ग्रामीण महिलाओं की स्थिति के बारे में अधिक जानने के लिए कुछ शोध किए गए। यह जानकारी पंचायती राज के काम करने के तरीके और महिला सशक्तिकरण से जुड़ी है।

अध्ययन ने उत्तराखंड पंचायती राज प्रणाली में राजनीति और सक्रियता में भाग लेने की कोशिश करते समय महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं को देखा, और इस प्रणाली के प्रशासन में महिलाओं की भूमिका को देखा। अध्ययन का निष्कर्ष इस डेटा पर आधारित था।

विष्लेषण -

हम जांच कर रहे हैं कि महिलाएं पंचायतों में कैसा प्रदर्शन कर रही हैं और समाज में उनकी क्या भूमिका है। हमने महिला सदस्यों और पंचायतों के प्रमुखों से यह पता लगाने के लिए बात की है कि उनके काम क्या हैं और वे कितने महत्वपूर्ण हैं। हमने यह भी देखा कि पंचायतों के पास कितना पैसा है और उनकी किस तरह की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि है।

सारणी सं0 - 01 बैठकों में भागीदारी

क्रम सं0		हमेशा	कभी कभी	कभी नहीं	योग
1	आवृत्ति	100	250	150	500
2	प्रतिशत	20	50	30	100

अध्ययन में, यह पाया गया कि पंचायतों से निर्वाचित प्रतिनिधियों में से केवल **20**ः ही हमेशा अपने ब्लॉक में बैठकों में भाग लेती हैं। हालाँकि, उत्तराखंड में पंचायतों में निर्वाचित पदों पर महिलाओं को **50**ः आरक्षण दिया गया है, महिलाएँ **50**ः क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि वे केवल बैठकों में उपस्थिति की संख्या बढ़ाते हैं तो उनकी स्थिति अपने आप बदल जाएगी। नियमित बैठकों में भाग लेने से ये महिला प्रतिनिधि अपने नेतृत्व कौशल में सुधार करेंगी।

सारणी सं0 - 02 पंचायतों के कामकाज में दिक्कते

क्रम सं0		हाँ	नहीं	योग
1	आवृत्ति	297	203	500
2	प्रतिशत	59.04	40.06	100

जिला पंचायत राज अधिकारी ने यह भी कहा कि कई राष्ट्रीय कार्यक्रम हैं जो लड़कियों को बचाने और उनकी शिक्षा में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हैं, विकास कार्यों के समुचित क्रियान्वयन आदि में ग्राम पंचायत की कितनी भागीदारी इन मानकों को सतगढ़ में पूरा किया गया है।

सारणी सं0 - 03 पंचायतों की निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका

क्रम सं0		कभी कभी	हमेशा	कभी नहीं	योग
1	आवृत्ति	377	65	58	500
2	प्रतिशत	75.04	13	11.06	100

नई पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के पास बहुत शक्ति है। कुछ मामलों में, वे स्वयं निर्णय ले सकते हैं, लेकिन अन्य मामलों में उन्हें ऐसा करने के लिए दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है। यह विशेष रूप से सच है जब महत्वपूर्ण मुद्दों की बात आती है, जैसे उनकी अपनी भूमिकाओं और अधिकारों के बारे में निर्णय। इसका मतलब यह है कि नई व्यवस्था में अभी भी महिलाएं पूरी तरह से सशक्त नहीं हैं।

सारणी सं0 - 04 ई-पंचायत

क्रम सं0		हाँ	नहीं	योग
1	आवृत्ति	125	375	500
2	प्रतिशत	25	75	100

सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत में ग्रामीण विकास को समझने के नए तरीके बनाने में मदद की है। विभिन्न प्रकार के ज्ञान और उपकरणों का उपयोग करके, यह तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करती है। दरअसल, एक ब्लॉक के एक प्रधान ने कहा कि सरकार ने पंचायतों को कंप्यूटर तो दिए हैं, लेकिन महिला प्रतिनिधियों को उनका इस्तेमाल करना नहीं आता. उनका मानना है कि ई-पंचायत पंचायतों के कामकाज में सुधार करने और उनके कर्मचारियों के बीच भ्रष्टाचार को खत्म करने में मदद करेगी। इसके उपयोग से ग्रामीण विकास के कार्य और भी तेजी से हो सकेंगे।

सारणी सं0 - 05 सरकार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

क्रम सं0		हाँ	नहीं	योग
1	आवृत्ति	305	195	500
2	प्रतिशत	61	39	100

उपरोक्त तालिका के अनुसार, **61**ः महिला प्रतिनिधियों का कहना है कि वे समय पर अपनी प्रभावशीलता में सुधार के लिए शैक्षिक कार्यक्रम करती हैं। हालाँकि, **39**ः महिलाओं को इसके बारे में जानकारी नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत में ग्रामीण विकास को समझने के नए तरीके बनाने में मदद की है। विभिन्न प्रकार के ज्ञान और उपकरणों का उपयोग करके, यह तकनीक ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करती है।

www.ignited.in

सारणी सं0 - 06 कामकाजी महिलाओ की समस्या

क्रम सं0		पुरुषों का विरोध	आर्थिक समस्या	समाज का विरोध	राजनेताओं का दबाव व अन्य हस्तक्षेप	अन्य कारण	योग
1	आवृत्ति	50	150	100	100	100	500
2	प्रतिशत	10	30	20	20	20	100

राजनीतिक कार्यालय के लिए चुनी गई कई महिलाओं का कहना है कि महिलाओं के लिए राजनीति में सफल होना बहुत मुश्किल है। कई महिलाएं केवल आरक्षित सीटों के लिए चुनाव लड़ने की कोशिश करती हैं, क्योंकि उम्मीदवारों की सूची में नाम आना बहुत मुश्किल होता है। अपने जवाबों के आधार पर, कई महिलाओं का मानना है कि राजनीति में महिलाओं के सामने मुख्य चुनौती ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक समस्याएं हैं। आज जब उम्मीदवारों द्वारा मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए इतना पैसा खर्च किया जा रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को अक्सर आगे बढ़ने में कठिनाई होती है क्योंकि उन्हें शहरों की महिलाओं की तुलना में अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

उपसंहार

भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति का मानना है कि हिंसा और जान से मारने की धमकियां कई महिलाओं को राजनीति में शामिल होने से रोक रही हैं। उनका कहना है कि यह बात उन्हें कई सांसदों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने बताई है. उनका मानना है कि राजनीति के क्षेत्र में महिलाओं के अधिक शामिल होने के पचास साल बाद भी यह सच है।

पिछले चार दशकों में, नारीवादियों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए एक साथ काम किया है, जिसमें घरेलू कामगारों के अधिकार, जादू-टोना करने वाली महिलाएं, हानिकारक गर्भनिरोधक का उपयोग करने वाली महिलाएं, स्थानांतरित करने के लिए मजबूर महिलाएं, उनके कारण मारी जाने वाली महिलाएं शामिल हैं। सामाजिक स्थिति, और महिलाएं जिनके पास जमीन है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि अगर महिलाएं अपने अधिकारों और उनका उपयोग करने के बारे में जागरूक होंगी तो उनके रहने की स्थिति में सुधार होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि महिलाओं के पास नेता होने पर बहुत शक्ति होती है, लेकिन अक्सर वे पुरुषों पर निर्भर होती हैं। यदि अधिक महिलाएं इसके बारे में जागरूक हों, और अपने स्वयं के जीवन और गांवों को चलाने के लिए आवश्यक नेतृत्व कौशल विकसित करें, तो देश तेजी से प्रगति करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

अधिकार्य, सी.डी (2008) श्लोकल गवर्नमेंट पार्टिषिपेषन एण्ड फ्यूचर आॅफ नेषनल डेमोक्रेसीष्, ए क्रिटिकल लुक, आई.ए. एस.एस.आईक्यूआट्र्ली, 27 (1-2)129-138

बासु, चैताली (2004) श्द वुमन रिजर्वेषन इष्यू इन रेस्ट्रोस्पेक्ट साॅषियल प्रेसपेक्टिवष्, 32 (1-2)109

गांधी महात्मा (2003) श्नये युग का सूत्रपात (प्रस्तुति-शरद कुमार साधक) आचार्य कुलश्, वाराणसी।

कटारिया (2008) श्सुरेन्द्रभारत में प्रषासनश्, मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर।

श्रीवास्तव (2018) राकेश, श्ग्रामीण महिलाओ का सशक्तिकरण, आगे की राहश्, कुरुक्षेत्र, जनवरी, 2018 पृ. 5-8

कौषिक, अनुपमा एण्ड शेखावत, गायत्री (2010) श्वुमन पंचायती राज इन्स्टीट्यूषन इन चितौड़गढती भागीदारीश्, कुरूक्षेत्र, अप्रैल, 2014 पृ. 17-19

सिंह, संतोष (2015) श्महिला सषक्तिकरण एवं सरकारी प्रयासश्, कुरूक्षेत्र, मार्च, 2015 पृ. 25-31

चैनाराम 'मुंदलिया' ;2019द्ध श्महिला सशक्तिकरण एवं पंचायती राजः एक विश्लेष्णात्मक अध्ययनश्ए International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) 181 ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.181-184

अलीम, षकीन, श्विमैन पोलिसी एण्ड सोषल चेन्जश्, नई दिल्ली, अग्ला पब्लिंषिंग हाउस, 1991

अम्बेडकर, एस. नगेन्द्रा, श्न्यू पंचायती राज एट वर्कश्, एवीडी पब्लिषर्स, जोधुपर, 2000

अम्बेडकर, एस. नगेन्द्रा, शैलजा, नगेन्द्रा, श्वीमन एण्ड पंचायती राजश्, एवीडी पब्लिषर्स, जोधुपर, 2008

अम्बेडकर, एस.एन. नगेन्द्रा, शैलजा, श्वीमन एम्पावरमेन्ट एण्ड पंचायती राजश्, एवीडी पब्लिषर्स, जयपुर, 2011

असलम, एम., श्पंचायती राज इन इण्डियाश्, नेषनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, दिल्ली, 2007

अनिता,"पंचायती राज एवं महिला सषक्तीकरण" राजस्थान विकास,महिला सषक्तीकरण विषेषा ंक, मार्च,2001

आप्टे, प्रभा, श्भारतीय समाज में नारीश्, जयपुर,क्लासिक पब्लिषिंग हाऊस,1996

अनिरमन, कष्यप, श्गवर्नर्स रोल इन इण्डियन कन्स्टीटयूषनश्, न्यू देहली,लान्सर्स बुक,1993

भट्ट, जयश्री, श्समाज कल्याणः नारी दीक्षा संस्कृतिश्, बीना (एम.पी.), आदित्य पब्लिषर्स,1998

भट्ट, जी.डी., श्इमर्जिंग लीडरषिप पैटर्न इन रूरल इण्डियाश्, नई दिल्ली एम.डीपब्लिकेषंस

भार्गव, वी. एस., श्पंचायत राज सिस्टम् एण्ड पोलिटिकल पार्टीजश्, नई दिल्ली, आषीष पब्लिषिंग हाऊस, 1979

भट्टाचार्य, मोइत्री, श्पंचायती राज इन बेस्ट बंगालः डेमोक्रेटिक डिसेन्ट्रलाइजेषन और डेमोक्रेटिक सेन्ट्रलिज्मश् न्यू देहली, मयंक पब्लिकेषन, 2002

Corresponding Author

Nishat Arshi*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.